7

''कब तक, हे प्रभु?''

(1:1-8)

यहूदियों की नज़र में उनके पूर्वजों को परमेश्वर के ''बलवंत हाथ के द्वारा मिस्र देश से निकाल'' लाने के विवरण से अधिक शांति देने वाला और कोई नहीं था (निर्गमन 32:11)। मिस्रियों के दमन के कारण इस्राएली परमेश्वर के सामने चिल्लाते थे। परमेश्वर ने ''उनकी चिल्लाहट'' को सुना (निर्गमन 3:7) और उसे उन पर तरस आया। इसी लिए एक दिन जंगल में मूसा ने जलती हुई झाड़ी के सामने खड़े होकर ये अद्‌भुत वचन सुने थे:

> मैं तेरे पिता का परमेश्वर और अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूं। ... मैं ने अपनी प्रजा के लोग जो मिस्र में हैं, उनके दु: ा को निश्चय दे ाी है और उनकी जो चिल्लाहट परिश्रम कराने वालों के कारण होती है, उसे ाी मैंने सुना है और उनकी पीड़ा पर मैंने चित्त लगाया है; इसलिए अब मैं उतर आया हूं कि उन्हें मिस्रियों के वश से छुड़ाऊं, और उस देश से निकालकर एक अच्छे और बड़े देश, जिस में दूध और मधु की धारा बहती है, ... पहुंचाऊं। सो अब सुन, इस्राएलियों की चिल्लाहट मुझे सुनाई पड़ी है, और मिस्रियों का उन पर अन्धेर करना ाी मुझे दि ााई पड़ा है (निर्गमन 3:6-9)।

प्रकाशितवाक्य के आर्र भक शब्दों का अध्ययन करते हुए मैं फिरौन के अधीन इस्राएलियों और सम्राट डोमिशियन के अधीन मसीही लोगों के दमन में समानता को देखकर स्तब्ध रह गया। इस्राएलियों की पुकार सताए जाने वाले मसीही लोगों की निरन्तर प्रार्थनाओं के उसके उत्तर से अत्यन्त मिलती-जुलती थी।

मसीही लोग राहत के लिए परमेश्वर से विनती कर रहे थे। अध्याय 6 में हम उनके विषय में पढ़ते हैं ''जो परमेश्वर के वचन के कारण वध किए गए थे'' (6:9)। वे ऊंचे स्वर में पुकार रहे थे, ''हे स्वामी, हे पवित्र, और सत्य; तू कब तक न्याय न करेगा? और ... हमारे लोहू का पलटा कब तक न लेगा?'' (6:10)। ''पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं के साथ'' (8:3; देखें 5:8; 8:4) जो ''सताव'' में थे (1:9) उनकी विनतियां मिल गईं। मसीही लोग चकित होंगे कि ''परमेश्वर कब तक हस्तक्षेप नहीं करेगा? हम कब तक भेद्य रहेंगे?'' प्रकाशितवाक्य की पुस्तक उनके प्रश्नों का परमेश्वर का उत्तर है, जो पूछे गए या जो नहीं पूछे गए। जंगल में परमेश्वर ने मूसा को शांति का संदेश दिया था, अब पतमुस के टापू पर उसने यूहन्ना को सांत्वना की बातें दीं।

इस पाठ में हम प्रकाशितवाक्य की पहली आठ आयतों का अध्ययन करेंगे। पहली नज़र में ये आयतें पुस्तक का परिचय ही लगती हैं, पहले उनमें से कई वाक्यांशों पर टिप्पणी करने के कारण हम उन पर जल्दी करने की परीक्षा में पड़ सकते हैं।[1] परन्तु विचार करने पर हम देखेंगे कि ये आयतें हमारे अध्ययन के लिए लय बिठाती हैं।

''कब हमारी सहायता के लिए आएगा?'' (1:1, 2)

पुस्तक आर भ होती है:

> यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य जो उसे परमेश्वर ने इसलिए दिया कि अपने दासों को वे बातें, जिनका शीघ्र होना आवश्यक है, दिखाए: और उसने अपने स्वर्गदूत को भेज कर उसके द्वारा अपने दास यूहन्ना को बताया। जिसने परमेश्वर के वचन और यीशु मसीह की गवाही, अर्थात जो कुछ उसने देखा था, उसकी गवाही दी (1:1, 2)।

''प्रकाशितवाक्य'' शब्द यूनानी भाषा के *apokalupsis* (अपोकलुपसिया) से लिया गया है, जिसका अर्थ ''ढकना खोलना'' या ''परदा हटाना'' है। अपने मन में किसी बड़े कलाकार की नवीनतम कलाकृति से परदा हटाने की नाटकीय कल्पना करें। आशा बढ़ रही है; अनुमान ऊफ़ान पर है। अन्त में परदा हटाया जाता है और भीड़ लपक पड़ती है, क्योंकि यह बड़ी ही खूबसूरत है। ऐसे ही परमेश्वर की शांति की कलाकृति से नाटकीय रूप से प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में परदा हटाया जाता है।

इसे ''यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य'' नाम दिया गया है। इसका अर्थ ''(1) यीशु मसीह की ओर से या के द्वारा, (2) यीशु मसीह का या (3) दोनों हो सकता है।''[2] पूरी आयत इस विचार का समर्थन करती है कि यह वह प्रकाशन है, जो यीशु ने यूहन्ना को दिया, परन्तु पुस्तक यीशु के बारे में भी बहुत कुछ प्रकट करती है।

'पहली आयत से तीन तथ्यों पर बल दिया जाना चाहिए: (1) यीशु को यह संदेश *परमेश्वर* ने दिया।[3] (2) उसने यह संदेश ''अपने दासों''[4] अर्थात अपने लोगों की भलाई के लिए दिया (रोमियों 6:17, 18)। (3) उसने अपने दासों को ''वे बातें जिनका शीघ्र होना आवश्यक है'' दिखाने के लिए यह संदेश दिया।[5] यूनानी शब्द के अनुवाद ''शीघ्र'' का अर्थ ''तुरन्त'' या ''तत्काल'' है। उनकी चिल्लाहट के उत्तर में कि ''हे स्वामी, कब तक?''[6] (6:10) परमेश्वर ने उत्तर दिया, ''हि मत रखो; *अधिक देर नहीं लगेगी!* मैं तु हें बचाने और तु हारे शत्रुओं को दण्ड देने के कार्य में जुटा हुआ हूं!''

यह संदेश अपने लोगों तक पहुंचाने के लिए परमेश्वर ने प्रकाशन की एक कड़ी का इस्तेमाल किया। परमेश्वर ने यह संदेश यीशु को दिया। यीशु ने संदेश को यूहन्ना तक पहुंचाने के लिए अपने स्वर्गदूत को भेजा (देखें 22:8, 16) ताकि वह इसे परमेश्वर के

लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए उन्हें दे सके।

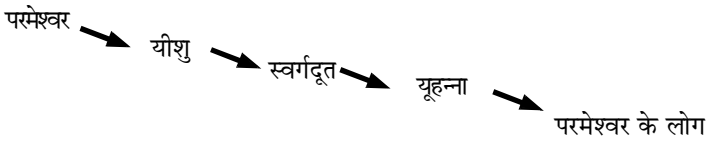

''यूहन्ना'' प्रेरित यूहन्ना ही है, जो शायद एकमात्र जीवित प्रेरित है। उसने संदेश की प्रमाणिकता के लिए अपने पाठकों को व्यक्तिगत आश्वासन दिया: उसने घोषणा की कि उसने ''परमेश्वर के वचन और यीशु मसीह की गवाही, अर्थात जो कुछ उसने देखा था उसकी गवाही दी'' (1:2)।[7]

प्रकाशन की कड़ी में परमेश्वर द्वारा स्वर्गदूत का इस्तेमाल करना महत्वपूर्ण है। मूसा को जंगल में ''प्रभु के *स्वर्गदूत*'' ने ही ''कंटीली झाड़ी के बीच आग की लौ में दर्शन दिया'' था (निर्गमन 3:2)। इसी प्रकार स्वर्गदूत को यूहन्ना के पास यह बताने के लिए भेजा गया कि परमेश्वर ने अपने लोगों की सुन ली है।

यह महसूस करना कि परमेश्वर अपने लोगों की सुनता और उन्हें उत्तर देता है, आवश्यक है। उस शांत रात में जब भय हम पर छाया हो और कष्ट हमें भयंकर रूप से डराता हो, जब ऐसा लगे कि अंधेरा प्रभु के सामने हमारी पुकार को निगल जाएगा, उस समय हमें भजन संहिता 34:15 के शब्द याद होने चाहिए: ''यहोवा की आंखें धर्मियों पर लगी रहती हैं और उसके कान भी उनकी दोहाई की ओर लगे रहते हैं।'' जैसे पतरस ने कहा है, ''क्योंकि प्रभु की आंखें धर्मियों पर लगी रहती हैं, और उसके कान उसकी विनती की ओर लगे रहते हैं'' (1 पतरस 3:12)!

''कब तू हमें फिर से आशीष देगा?'' (1:3)

आयत 3 में हमें एक आशीष मिलती है, जो विशेषकर प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में ही है: ''धन्य है वह जो इस भविष्यवाणी के वचन को पढ़ता है, और वे जो सुनते हैं और इसमें लिखी हुई बातों को मानते हैं, क्योंकि समय निकट आया है।'' ''जो पढ़ता है'' कलीसिया की सार्वजनिक सभा में वचन को पढ़ने वाले को कहा गया है।[8] उस समय बहुत से लोग पढ़ नहीं सकते थे और कुछ लोग ही पवित्र शास्त्र की प्रति खरीद सकते थे। लोगों को यदि अपने जीवनों के लिए परमेश्वर की इच्छा को जानना हो तो उनके बीच में वचन का पढ़ा जाना आवश्यक था (रोमियों 10:17)।[9] आज बाइबलों की कमी नहीं है, पर आज भी हमें उन लोगों द्वारा सुनना आवश्यक है, जो पढ़ने को ''अर्थ देने'' के योग्य हों। (देखें नहे याह 8:8)।

आयत 3 यह ज़ोर देती है कि प्रकाशितवाक्य को केवल सुनाया जाना ही नहीं, बल्कि सुनना[10] और इस पर ध्यान देना भी आवश्यक है।[11] यूहन्ना ने इस बात के महत्व पर ज़ोर दिया, जब उसने प्रकाशितवाक्य को ''भविष्यवाणी'' के साथ मिलाया। नाम ''भविष्यवाणी''

मिलना इस बात पर बल देता है कि प्रकाशितवाक्य परमेश्वर की ओर से है[12] इसलिए इसे लापरवाही से नहीं लिया जाना चाहिए। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में स्पष्ट और अस्पष्ट दोनों तरह की आज्ञाओं की भरमार है।[13] उन आज्ञाओं को सुनना और मानना वैकल्पिक नहीं है।

इस्राएलियों की अगुआई करते हुए मूसा ने उन्हें ''अपने परमेश्वर यहोवा का वचन तन मन से सुनने, ... और उसकी सब विधियों को मानने'' का आदेश दिया था (निर्गमन 15:26)। यदि वे उसकी बात मानते तो उन्हें आशीष मिलनी थी (निर्गमन 23:22)। इसी प्रकार यूहन्ना ने अपने समय के घिरे हुए मसीही लोगों से कहा कि प्रकाशितवाक्य की प्रतिज्ञाएं केवल विश्वासी रहने वालों के लिए थीं (2:10)।

उसी संदेश की आज भी आवश्यकता है। जब समस्याएं हमारे जीवन में आती हैं, तो परमेश्वर तब तक हमारे जीवनों में काम नहीं कर सकता, जब तक हमारी इच्छा उसकी इच्छा के आगे समर्पित न हो। यीशु ने कहा, ''तुम तो ये बातें जानते हो और यदि उन पर चलो, तो धन्य हो'' (13:17; याकूब 1:22 भी देखें)। ''मैंने इसे *अपने* ढंग से किया'' वाला आज का सांसारिक गीत बहुत से लोगों के दर्शन को दिखाता है। यदि हम परमेश्वर से आशीष पाना चाहते हैं तो ''दिल मेरा ले रब्ब, दिल मेरा ले...'' के सुन्दर गीत में व्यक्त विचार अपने मन में पैदा होने दें!

आरंभिक मसीहियों के लिए, आयत 3 का सबसे प्रोत्साहित करने वाला भाग ''क्योंकि समय निकट है'' शब्दों में मिलता था।[14] ''निकट है'' वाक्यांश का अनुवाद उसी मूल यूनानी शब्द से हुआ है, जिसका अनुवाद मरकुस 1:15 में ''निकट आ गया'' हुआ है: ''समय पूरा हुआ और परमेश्वर का राज्य *निकट आ गया* है।'' मरकुस 1:15 की घोषणा का अर्थ यह नहीं था कि राज्य की स्थापना भविष्य में कई हज़ार साल बाद होगी। इसके बजाय वक्ता यह कह रहा था कि राज्य के स्थापित होने का समय आ चुका था। इसी कारण प्रेरित यूहन्ना अपने समय के मसीही लोगों को आश्वस्त कर रहा था कि परमेश्वर की आशीष *तब* मिलनी थी, न कि भविष्य में हज़ारों साल बाद। ''अपने जीवन के लिए लड़ रही दीवार की ओर पीठ करने वाली कलीसिया को, सांसारिक समयसारिणी की आवश्यकता नहीं है कि बीस सदियों बाद क्या होगा। इसे यह पता होना आवश्यक है कि यीशु मसीह इस समय उसके जीवन की देखभाल *अब* कर रहा है।''[15]

कई बार आप भी अपने आप को पराजित और अकेले महसूस कर सकते हैं। ऐसा होने पर याद रखें कि परमेश्वर समस्या में *हर समय* मिलने वाली सहायता है (भजन संहिता 46:1-7)। परमेश्वर पहली शताब्दी के मसीहियों को जो कष्ट में थे, आशीष देने को तैयार था। वह आपको भी आशीष देने को तैयार है!

''कब तू हमारे कष्टों को समझेगा?'' (1:4)

4 से 7 आयतों में यूहन्ना के समय की पत्रियों के मानक का इस्तेमाल है। पत्र में पहले प्रेषक और प्राप्तकर्त्ता का परिचय होता था। इस कारण हम पढ़ते हैं, ''यूहन्ना की ओर से आसिया की सात कलीसियाओं के नाम'' (आयत 4क)। ''आसिया'' एशिया महाद्वीप को

नहीं कहा गया है, बल्कि यह एशिया के रोमी साम्राज्य को, जो आधुनिक तुर्की के पश्चिमी तट पर स्थित था, कहा गया है।[16] अध्याय में आगे दी गई सात कलीसियाएं वे सात मण्डलियां थीं, जो इफिसुस, स्मुरना, पिरगमुन, थुआतीरा, सरदीस, फिलदिलफिया और लौदिकिया नगरों में इकट्ठी होती थीं (आयत 11)।

आम तौर पर पूछा जाता है कि ''ये सात क्यों?'' क्योंकि उस इलाके में तो सात से अधिक कलीसियाएं थीं। हम कुछ अनुमान लगा सकते हैं: (1) सात कलीसियाएं पुस्तक में ''सात'' अंक पर बल देने के कारण चुनी गई होंगी। (2) ये सात उस इलाके के घेरे के मार्ग पर होंगी; उनसे शांति का संदेश पूरे इलाके में फैल सकता था। (3) इन सात को इसलिए चुना गया हो सकता है, क्योंकि वे उस समय और किसी भी समय की कलीसियाओं का आदर्श थीं।

और प्रासंगिक प्रश्न हो सकता है कि ''सात कलीसियाएं *एशिया* में ही क्यों?'' प्रकाशितवाक्य लिखे जाने के समय, कलीसियाएं पूरे रोमी साम्राज्य में स्थापित हो चुकी थीं? तो फिर एशिया की सात कलीसियाओं को ही पत्र क्यों भेजे गए? रोम का सताव सबसे अधिक वहीं पर तो था; वहीं तो मसीही लोग सबसे अधिक परेशान थे। इसके दो कारण थे: (1) एशिया में सम्राट की पूजा का पूरा ज़ोर था। ''कैसर की पूजा करने वाला स प्रदाय एशिया में बहुत प्रसिद्ध था। स प्रदायों और हर प्रकार के रहस्यों के लिए उपजाऊ भूमि थी और देशभक्ति, धर्म और रहस्यवाद को इतनी दक्षता से मिलाने वाले इस स प्रदाय का दूसरी हर बात से अधिक स्वागत किया जाता था।''[17] (2) मसीहियत एशिया में सबसे मज़बूत थी। 70 ईस्वी के बाद यह क्षेत्र ''मसीहियत का मु य गढ़ बन चुका था।''[18] मसीही लोगों द्वारा दृढ़ता से राजा की पूजा का विरोध करने के कारण झगड़ा स्पष्ट था। रोमी दण्ड का ज़ोर एशिया में रहने वाले मसीही लोगों पर पड़ा।

परमेश्वर *जानता* था कि आवश्यकता कहां है। उसे मालूम था कि उसकी संतान कहां कष्ट में है और जहां आवश्यकता थी, वहीं उसने अपनी शांति दी। मूसा के पास आकर उसने कहा था, ''मैंने अपनी प्रजा के लोग जो मिस्र में हैं, उनके दुख को निश्चय देखा है; ... और उनकी पीड़ा पर मैंने चित लगाया है'' (निर्गमन 3:7)। पिरगमुन की कलीसिया से उसने कहा, ''मैं यह तो जानता हूं, कि तू वहां रहता है, जहां शैतान का सिंहासन है'' (2:13) अर्थात जहां शैतान सबसे शक्तिशाली है। परमेश्वर आज भी परमेश्वर ही है, जो सब कुछ जानता है। परमेश्वर को मालूम है कि हमारा मन कब टूटा है। वह जानता है कि जीवन के बोझ कब आपको परेशान करते हैं। वह जानता है कि जब आपको लगे कि अब आपके सुनने से बाहर हो गया है। ''परमेश्वर ... सब कुछ जानता है'' (1 यूहन्ना 3:20)!

''कब तू हमें आश्वासन देगा?'' (1:4, 5)

उस समय के पत्रों में, आगे अभिवादन था। ''तु हें अनुग्रह और शांति मिलती रहे'' (आयत 5ख)।[19] ''अनुग्रह'' परमेश्वर की वह दया है जिसे कमाया न गया हो; ''शांति'' हमारे जीवनों में परमेश्वर के काम के कारण आती है। नि:संदेह यूहन्ना के पाठक परमेश्वर

के अनुग्रह की प्रतीक्षा कर रहे थे और उनके मन उसकी शांति के लिए तड़प रहे थे।

इसलिए यूहन्ना ने आगे लिखा कि यह अभिवादन ''उसकी ओर से जो है, और जो था, और जो आने वाला है;[20] और उन सात आत्माओं की ओर से, जो उसके सिंहासन के सा हने हैं।[21] और यीशु मसीह की ओर से'' हैं (आयतें 4ख, 5क)। यह वाक्य रचना असामान्य है, परन्तु यूहन्ना ने परमेश्वरत्व अर्थात पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की बात की: (1) संदर्भ में, ''जो है और जो था और जो आने वाला है'' पिता अर्थात अनादि परमेश्वर के लिए होना चाहिए।[22] (2) ''सात आत्माओं की ओर से, जो उसके सिंहासन के सामने हैं'' का अर्थ पवित्र आत्मा के लिए होना चाहिए।[23] ''एक ही आत्मा'' है (इफिसियों 4:4), इसलिए ''सात'' का इस्तेमाल यहां इसके ''स पूर्ण'' या ''पवित्र स पूर्णता'' के सांकेतिक महत्व में किया गया होगा।[24] ''सात आत्माएं'' वाक्यांश शायद परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने की पवित्र आत्मा की स पूर्ण क्षमता के लिए है। (3) ''त्रिएकता'' की सूची पुत्र अर्थात ''यीशु मसीह'' के नाम से पूरी होती है।

परमेश्वर पिता के विवरण के लिए यूहन्ना द्वारा इस्तेमाल किए गए वाक्यांश उसके पाठकों के लिए ज़बर्दस्त संकेत होंगे। जब परमेश्वर ने मूसा को उसके लोगों को छुड़ाने के लिए कहा था, तो मूसा ने आपत्ति जताई थी, ''तब यदि वे मुझ से पूछें, कि उसका क्या नाम है? तब मैं उन्हें क्या बताऊं?'' (निर्गमन 3:13)। फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा था, ''**मैं जो हूं सो हूं।** ... तू इस्राएलियों से यह कहना, कि जिसका नाम **मैं हूं** उसी ने मुझे तु हारे पास ोजा है'' (निर्गमन 3:14)। प्रकाशितवाक्य 1:4 में हुआ अनुवाद ''जो है'' ''[निर्गमन] 3:14 वाले **मैं हूं** का यूनानी रूप है।''[25]

पुराने नियम से परिचित पाठक प्रकाशितवाक्य में परमेश्वर के लिए इस पदनाम को परमेश्वर द्वारा इस्राएल के छुटकारे में शामिल बातों को याद किए बिना सुन नहीं सकते। उन्हें याद आ जाएगा कि परमेश्वर ने मूसा और हारून को फिरौन के सामने बड़े-बड़े चिह्न दिखाकर यह प्रमाणित करने की योग्यता दी थी कि वे परमेश्वर की ओर से हैं। उन्हें मिस्रियों को घुटनों के बल लाने वाले पानी के लहू बन जाने से लेकर दसों विपत्तियां याद आ जाएंगी।

दबे हुए मसीहियों को यह आश्वासन मिला था कि परमेश्वर जो फिरौन से नहीं डरा था वह कैसर से भी नहीं डरेगा। परमेश्वर जिसने कालांतर में अपने लोगों को छुड़ाया था, वह उनके समय में ही अपने लोगों को छुड़ा सकता था, क्योंकि परमेश्वर आज भी परमेश्वर था। आपको और मुझे भी यह आश्वासन मिलना चाहिए कि परमेश्वर हमें *हमारी* समस्याओं से निकाल सकता है। हमारा परमेश्वर वह परमेश्वर है ''जो है और जो था और जो आने वाला है''!

''कब तू नियन्त्रण अपने हाथ में लेगा?'' (1:5, 6)

4 और 5 आयतों में पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के बारे में लिखने के बाद यूहन्ना ने पुत्र का अन्त में उल्लेख किया, क्योंकि शेष अध्याय यीशु के विषय में ही है। यूहन्ना यह बताते हुए कि वह कौन *है,* यीशु पर बल देने लगा: ''जो विश्वासयोग्य साक्षी और मरे

हुओं में से जी उठने वालों में पहिलौठा और पृथ्वी के राजाओं का हाकिम है'' (आयत 5क)। इनमें से प्रत्येक उपाधि यूहन्ना के पाठकों को शांति देने के लिए थी:

''*विश्वासयोग्य साक्षी।*'' जीवन भर यीशु ने परमेश्वर की इच्छा की गवाही वफ़ादारी से दी थी (यूहन्ना 3:32; 18:37),[26] यहां इसका अर्थ इससे कहीं अधिक है। यूनानी शब्द का अनुवाद ''साक्षी'' वही शब्द है, जिससे हमें ''शहीद'' शब्द मिला है; यानी यीशु ''मृत्यु तक'' विश्वासयोग्य गवाह रहा था (फिलिप्पियों 2:8)।[27]

''*मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहिलौठा।*''[28] यीशु की देह कब्र में नहीं रही थी। फिर कभी न मरने के लिए जी उठने वालों में से सबसे पहला होने के कारण उसने मृत्यु पर विजय पा ली थी! मृत्यु से डरे हुए लोगों को उसने बताया, ''मैं मर गया था, और अब देख मैं युगानुयुग जीवता हूं; और मृत्यु और अधोलोक की कुंजियां मेरे ही पास हैं'' (आयत 18)। मसीही लोगों को यह आश्वासन मिला था कि वे जी उठेंगे (1 कुरिन्थियों 15:54-57)!

''*पृथ्वी के राजाओं का हाकिम।*'' जी उठने के चालीस दिन बाद यीशु स्वर्ग में उठा लिया गया, जहां वह परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठ गया। वहां वह ''परम धन्य और एकमात्र अधिपति और राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु'' के रूप में राज्य करता है (1 तीमुथियुस 6:15; प्रकाशितवाक्य 19:16 भी देखें)।[29] कैसर संसार का हाकिम नहीं था; हाकिम तो यीशु था और वह इसी सच्चाई को दिखाने की तैयारी कर रहा था!

यह समझाने के बाद कि यीशु कौन है, यूहन्ना ने महिमा का एक अति सहज गीत सुना: ''वह हम से प्रेम रखता है और उसने अपने लहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया है, और हमें एक राज्य और अपने पिता परमेश्वर के लिए याजक भी बना दिया; उसी की महिमा और पराक्रम युगानुयुग होता रहे। आमीन'' (आयत 5ख, 6)। यूहन्ना अपने पाठकों को याद दिला रहा था कि यीशु ने उनके लिए क्या किया है।

''*वह हम से प्रेम रखता है।*'' यूनानी शब्द का अनुवाद ''प्रेम रखता है'' वर्तमान काल में है, जो निरन्तर क्रिया का संकेत देता है।[30] यीशु ने अपना प्रेम इस पृथ्वी पर आकर और क्रूस पर जान देकर दिखाया, और वह हमारा ध्यान रखकर और हमारी रक्षा करके अपना प्रेम दिखाना *जारी रखता* है। मृत्यु का सामना कर रहे मसीही लोगों को यह अद्‌भुत सच्चाई प्रोत्साहित करती थी (रोमियों 8:36, 37)।

''*उसने अपने लहू के द्वारा अपने पापों से छुड़ाया*[31] *है।*'' पिछले वाक्यांश में वर्तमान काल का इस्तेमाल हुआ था, जो निरन्तर क्रिया का संकेत देता है। इस वाक्यांश में अनिश्चित भूतकाल है, जो कालांतर में एक ही समय में होने वाली क्रिया का संकेत है।[32] एक ही बार होने वाली वह क्रिया क्रूस पर यीशु की मृत्यु थी! उसने हमारे लिए अपना लहू बहाया, जिससे हमारे प्राणों का दोष दूर कर दिया गया (रोमियों 5:9; इफिसियों 1:7; कुलुस्सियों 1:20; 1 पतरस 1:18, 19; 1 यूहन्ना 1:7)। उसने हमें स्वतन्त्र कराया!

उसने ''*हमें एक राज्य*[33] *और अपने पिता परमेश्वर के लिए याजक भी बना दिया।*[34]'' फिर हम निर्गमन की पुस्तक में आते हैं। परमेश्वर ने इस्राएलियों से यह प्रतिज्ञा की थी कि

''... यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे, और मेरी वाचा का पालन करोगे, तो ... तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे'' (निर्गमन 19:5, 6)। पन्द्रह सौ वर्षों बाद, वह प्रतिज्ञा आत्मिक इस्राएल अर्थात कलीसिया में पूरी हुई (गलातियों 3:29; रोमियों 2:28, 29; 1 पतरस 2:9)। हर मसीही याजक है, जिस कारण हमारे लिए परमेश्वर को आत्मिक बलिदान चढ़ाने आवश्यक हैं (1 पतरस 2:5; इब्रानियों 13:15; रोमियों 12:1)। परन्तु हम याजकों से बढ़कर हैं, क्योंकि हम याजकों का *शाही* समाज हैं। हम शाही परिवार के लोग हैं!

यीशु की विशेषताओं पर फिर से ध्यान दें तो आप पाएंगे कि स्वर्ग और पृथ्वी पर कोई ऐसी चीज़ नहीं है, जिस पर वह नियन्त्रण न कर सकता हो। हमें यूहन्ना के साथ कहना चाहिए, ''उसी की महिमा और पराक्रम युगानुयुग रहे। आमीन'' (आयत 6ख; देखें दानिय्येल 7:13, 14)!

''कब तू हमारे शत्रुओं को दण्ड देगा?'' (1:7)

यूहन्ना ने यीशु को विश्वासयोग्य, जी उठा, हाकिम, प्रेम करने वाला और महिमा प्राप्त के रूप में दिखाया था। आगे उसने घोषणा की कि वही आ रहा है: ''देखो, वह बादलों के साथ आने वाला है; और हर एक आंख उसे देखेगी,[35] वरन जिन्होंने उसे भेधा था, वे भी उसे देखेंगे,[36] और पृथ्वी के सारे कुल उसके कारण छाती पीटेंगे। हां। आमीन'' (आयत 7)।

जे. डब्ल्यू. रॉबर्ट्स ने कहा है, ''यह इनकार करना कि [यह] प्रतिज्ञा मु यतया द्वितीय आगमन की है, अस भव होगा।''[37] फिर उन्होंने जोड़ा कि इस संदर्भ में प्रतिज्ञा यहां तक *सीमित* नहीं हो सकती। दुष्टों को दण्ड देने के लिए बादलों में परमेश्वर के आने का संकेत पूरे पवित्र शास्त्र में देखा जा सकता है (देखें यशायाह 19:1 और यहेजकेल 30:3, 4)। रोम की एड़ी के नीचे कुचले जा रहे मसीही लोगों को यह पता होना चाहिए था कि प्रभु उनके दमनकारियों को दण्ड देने के लिए *तुरन्त* कुछ करने वाला था। यीशु ने उन्हें इन शब्दों के साथ आश्वासन दिया ''मैं *शीघ्र* आ रहा हूं'' (देखें 2:5, 16; 3:11; 22:7, 12, 20)।

रोमी साम्राज्य का न्याय करने के लिए उसके आने पर अप्रसन्नता फैल जानी थी। आयत 7 कहती है, ''पृथ्वी के सारे कुल[38] उसके कारण छाती पीटेंगे''; ''यह छाती पीटना मन फिराना नहीं, बल्कि निराशा है।''[39] मसीही लोगों को सताने वालों ने वैसे ही शोक मनाना था, जैसे मिस्रियों ने अपने पहिलौठे पुत्रों के मरने पर मनाया था (निर्गमन 11:6)। जिन्होंने परमेश्वर के लोगों को सताया था, उन्होंने वही काटना था, जो उन्होंने बोया था बल्कि उसका दोगुना और तीन गुणा!

यह ज़ोर दिया जाना चाहिए कि (जैसे रॉबर्ट्स ने दिया) आयत 7 की प्रतिज्ञा ''*मु य* रूप से द्वितीय आगमन की है।'' पवित्र शास्त्र में उल्लेखित अस्थाई ''न्याय का आना'' उस अन्तिम अर्थात द्वितीय आगमन की ओर संकेत करता है, जब सब लोग अन्त में परमेश्वर के सिंहासन के सामने खड़े होंगे और उनका न्याय किया जाएगा। यह वह अन्तिम घटना होगी, जब सब गलतियां सुधार दी जाएंगी।[40] आर भिक मसीहियों के लिए मसीह के

दोबारा आने के विचार से बड़ी शांति देने वाली कोई और बात नहीं थी! यदि आप उसकी वापसी के लिए तैयार हैं तो आपको भी इससे बड़ी शांति मिलेगी!

यह घोषणा करने के बाद कि यीशु आ रहा है, यूहन्ना ने कहा, ''हां। आमीन।'' अर्थात उसने कहा ''आमीन और आमीन!''[41] पूरी मण्डली कहे, ''आमीन!''[42]

''कब तू अपनी गारंटी देगा?'' (1:8)

आयत 8 में प्रभु ने यूहन्ना की बात को बीच में काट दिया: ''प्रभु परमेश्वर वह जो है, और जो था, और जो आने वाला है; जो सर्वशक्तिमान है: यह कहता है, कि मैं ही अल्फा और ओमिगा हूं'' (आयत 8)। ''अल्फा'' और ''ओमिगा'' यूनानी वर्णमाला का पहला और अन्तिम अक्षर है, जैसे अंग्रेज़ी वर्णमाला का ''A'' और ''Z.'' परमेश्वर आदि और अन्त, पहला और पिछला है। ''जो है और जो था और जो आने वाला है'' वाक्यांश परमेश्वर के विवरण के लिए आयत 4 का वाक्यांश ही है। ''सर्वशक्तिमान'' शब्द परमेश्वर की सामर्थ को बताता है और यह घोषित करता है कि ''सब का सर्वस पन्न प्रभु'' परमेश्वर है, न कि कैसर।

टीकाकार इस बात पर बंटे हुए हैं कि बोलने वाला परमेश्वर पिता था या परमेश्वर पुत्र। यह बात कि पिता ने पहले अपने आप को ''जो है और जो था और जो आने वाला है'' के रूप में वर्णित किया, इस विचार का पक्षधर है कि परमेश्वर पिता ने बात की। यह बात कि यीशु ने बाद में घोषणा की कि ''मैं अल्फा और ओमिगा, पहिला और पिछला, आदि और अन्त हूं'' (22:13; 1:17 भी देखें) इस विचार का समर्थन करता है कि पिता ने बात की।[43] इस बात का कम महत्व है।[44] जो भी हो आयत 8 प्रभु की व्यक्तिगत प्रमाणिकता की मुहर लगाती है कि ''तुम उन प्रतिज्ञाओं पर अपना जीवन दांव पर लगा सकते हैं, क्योंकि मैंने कहा है!''

प्रभु की ओर से इस प्रकार का व्यक्तिगत आश्वासन अप्रत्याशित था, परन्तु मसीही लोगों का सताव ऐसे ही हो रहा था। यूहन्ना के समय मसीही लोगों को परमेश्वर की घोषणा की आवश्यकता थी कि ''मैं स्वयं हालात को अपने हाथ में ले रहा हूं।'' अपने जीवन के साथ संघर्ष करते हुए आप को भी ऐसे ही आश्वासन की आवश्यकता पड़ सकती है!

सारांश

हमने गुलाम इस्राएलियों के परमेश्वर द्वारा छुड़ाए जाने और सताए जाने वाले मसीहियों को उसके छुड़ाने में कई समानताओं पर विचार किया है। और समानताएं भी दी जा सकती हैं।[45] परमेश्वर द्वारा मूसा और हारून को फिरौन के पास भेजने के समय हम ''दो गवाहों'' के बारे में पढ़ते हैं, जिन्हें ''सब पानी पर अधिकार है कि उसे लहू बनाएं और जब-जब चाहें तब-तब पृथ्वी पर हर प्रकार की विपत्ति लाएं'' (11:3, 6)। इस्राएलियों की परमेश्वर द्वारा जंगल में देखभाल करने की तरह (निर्गमन 3:18), हम कलीसिया के लिए ''परमेश्वर का तैयार किया हुआ स्थान'' पढ़ेंगे। प्रकाशितवाक्य इस स्थान को ''जंगल'' कहता है, क्योंकि वहां परमेश्वर के लोगों को खिलाया (12:6) और पाला जाएगा (12:14)। इस्राएलियों के उस देश में ''जिस में दूध और मधु की धारा बहती है'' (निर्गमन 3:17)

जाने की तरह हम ''जीवन के जल की एक नदी'' और ''जीवन के पेड़'' (22:1, 2) वाले देश की ओर अर्थात उस जगह की ओर जा रहे हैं, जहां परमेश्वर ''सब आंसू पोंछ डालेगा; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, ...'' (21:4)!

परन्तु अभी के लिए मैं प्रकाशितवाक्य की पहली आठ आयतों में हमें मिलने वाली *शांति* पर ज़ोर देना चाहता हूं कि हम उसमें पाई जाने वाली सच्चाइयों पर *विश्वास* करें। दो छोटे लड़के सूर्य के पूर्व से उदय होने और पश्चिम में अस्त होने के बारे में चर्चा कर रहे थे। एक ने कहा, ''मेरे पिता जी कहते हैं कि सूर्य वास्तव में बिल्कुल घूमता नहीं है। घूमती तो पृथ्वी है और हमें ऐसा *लगता है जैसे* सूर्य ही घूम रहा हो।'' दूसरे लड़के ने एक क्षण के लिए सोचा और कहने लगा, ''मैं तो अपनी आंखों पर ही विश्वास करूंगा।'' पहले लड़के ने शांत होकर परन्तु बड़ी दृढ़ता से उत्तर दिया, ''मैं तो *अपने पिता जी* पर विश्वास करूंगा।'' यदि मैं और आप पहली शताब्दी में रह रहे होते और हमें अपनी आंखों के प्रमाण को मानना पड़ता, तो हम यही निष्कर्ष निकालते कि मसीहियत का अन्त हो जाएगा। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि बहुत से मसीही लोगों ने अपनी आंखों के बजाय अपने-अपने पिता पर विश्वास किया। उन्होंने उसकी प्रतिज्ञा को माना और विजयी हुए। परमेश्वर हमारी सहायता करे कि हम उस पर विश्वास लाएं और उसके विश्वासयोग्य रहें![46]

सिखाने वालों और प्रचारकों के लिए नोट्स

यह पाठ हमारे अध्ययन के केन्द्र का आर भ है: व्या यात्मक प्रवचनों की एक शृंखला जिसमें प्रकाशितवाक्य का पूरा भविष्य समा जाता है।

1:1-8 पर इस पहले पाठ के स बन्ध में आप एक चार्ट बना सकते हैं, जिसमें मिस्र द्वारा इस्राएलियों की पुकार के लिए परमेश्वर के उत्तर और पहली शताब्दी में सताए जाने वाले मसीहियों के लिए उसके ध्यान में तुलना है। यह चार्ट कुछ ऐसे आर भ किया जा सकता है:

इस्राएली	*पहली शताब्दी के मसीही*
मिस्र में दास	रोम द्वारा सताए गए
परमेश्वर के आगे दोहाई दी	परमेश्वर के आगे दोहाई दी
परमेश्वर ने सुना	परमेश्वर ने सुना
परमेश्वर ने मूसा से बात की	परमेश्वर ने यूहन्ना से बात की
जंगल	पतमुस
स्वर्गदूत	स्वर्गदूत
जलती झाड़ी	महिमा पाया हुआ प्रभु
परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की	परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की
छुटकारा	छुटकाराआप जहां तक तुलना करना

चाहें इसे बढ़ा सकते हैं। यह दिखाने के लिए कि परमेश्वर *आज भी* हमारी सुनता और हमारे दुखी होने पर हमें उत्तर देता है, आप ''आज के मसीही'' शीर्षक से एक नया स्त भ जोड़ सकते हैं।

यदि आप 1 से 8 आयतों के लिए अधिक पर परागत ढंग को प्राथमिकता देते हैं, तो तीन मु य बातों वाली रूपरेखा इस प्रकार है: (1) लेख (आयतें 1-3); (2) अभिवादन (आयतें 4-7); (3) मुहर (आयत 8)। आपको पीटरसन का शीर्षक ''पवित्र शास्त्र पर अन्तिम बात''[47] पसन्द आ सकता है। आप यह सुझाव दे सकते हैं कि प्रकाशितवाक्य को समझाने के लिए पत्र के साथ डाक में मिले लेख की तरह है। लिफाफे पर पैकेट के सामान की ''मुहर लगी'' है (आयतें 1-3)। आप लिफाफा खोलकर कवरिंग लैटर पढ़ते हैं, (आयतें 4-7) जिसमें उस लेख में पाई जाने वाली प्रतिज्ञाएं बताई गई हैं। कवरिंग लैटर के नीचे नोटरी की मुहर है,[48] जो उस पत्र की सत्यता की गारंटी है (आयत 8)।

1:1-8 के छोटे भागों से प्रवचनों के लिए आर भ का स्थान मिल सकता है: उदाहरण के लिए आयत 3 बाइबल का अध्ययन करने तथा इसकी आज्ञा मानने के महत्व पर पाठ का आधार हो सकती है।

द गेट्स ऑफ़ न्यू लाइफ़ में जे स स्टुअर्ट ने ''मसीह मेरे लिए क्या है'' पर प्रकाशितवाक्य 1:5, 6 में से वचन शामिल किए हैं। उसकी मु य बातें थीं (1) वह ''हमसे प्रेम रखता है''; (2) उसने ''हमें अपने लहू के द्वारा हमारे पापों से छुड़ाया है''; (3) ''उसने हमें एक राज्य और याजक बनाया है''; (4) ''महिमा और पराक्रम सदा काल तक उसी का है।''

5 से 8 आयतों में यीशु के विवरणों का इस्तेमाल यीशु पर एक अर्थपूर्ण पाठ में किया जा सकता है। आयत 7 पर टिप्पणियों में मैंने छह वाक्याशों को शामिल किया था, जिनका इस्तेमाल ''विश्वासयोग्य'' के साथ आर भ करके किया जा सकता है।

1:3 वाले धन्यवचन से लेकर ''प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के सात धन्य वचन'' पर कई संदेश दिए गए हैं। अन्य धन्यवचनों 14:13; 16:15; 19:9; 20:6; 22:7, 14 में मिलती हैं। ''धन्यवचन'' शब्द लातीनी भाषा के लिए ''धन्य'' शब्द से लिया गया है। इसका इस्तेमाल उन आयतों के लिए किया जाता है, जिनका आर भ ''धन्य'' शब्द से होता है (जैसे मत्ती 5:3-11)। ''धन्य'' का अनुवाद यूनानी के *makarios* शब्द से किया गया है, जिसका अर्थ ''धन्य'' है परन्तु जो '' 'प्रसन्न' से कहीं अधिक है। इसमें परमेश्वर द्वारा किसी व्यक्ति में डाली गई अनुकूल परिस्थिति का वर्णन है।''[49]

टिप्पणियां

[1]उन में से कुछ टिप्पणियों को दोहराया जाएगा क्योंकि पाठ में उनकी आवश्यकता है और दोहराने से ही हम सीखते हैं। [2]रॉबर्ट माउंस, नोट्स ऑन द बुक ऑफ़ रैवलेशन, *द NIV स्टडी बाइबल,* सामा. संस्क. कैनथ बार्कर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1985), 1926. [3]कुछ लेखकों ने सुझाव दिया है कि यूहन्ना ने यह संदेश मूर्तिपूजक स्रोतों (बेबिलोनी, यूनानी, रोमी, और यहूदी मिथ) से लिया है, परन्तु

यूहन्ना ने इस बात पर ज़ोर दिया कि यह पुस्तक *परमेश्वर की ओर से* आई। [4]यूनानी शब्द के अनुवाद ''दास'' का संकेत यह है कि हम अपने नहीं हैं यानी हमें दाम देकर मोल लिया गया है (1 कुरिन्थियों 6:19, 20)। [5]अध्याय 22 की आयत 6 में भी ''वे बातें जिनका शीघ्र पूरा होना आवश्यक है'' हैं। [6]CEV में इसका अनुवाद ''जो जल्द होना आवश्यक है'' है (*द होली बाइबल: कंटैं परेरी इंग्लिश वर्ज़न* [नैशविल्ले: थॉमस नैलसन पब्लिशर्स, 1995]), और पीटरसन में ''जो होने वाला है'' है (यूजीन एच. पीटरसन, *द मैसेज: द न्यू टैस्टामेंट विद सा स एण्ड प्रोवर्ब्स* [कोलोराडो स्प्रिंगस, कोलोराडो: नवप्रैस पब्लिशिंग ग्रुप, 1995], 609)। [7]22:8 भी देखें। जीवन भर यूहन्ना परमेश्वर के वचन की गवाही के लिए विश्वासी रहा था। परन्तु आयत 2 में ''परमेश्वर के वचन'' और ''यीशु मसीह की गवाही'' वाक्यांश पतमुस टापू पर ''जो कुछ उसने देखा'' और सुना था, उसके बारे में था। [8]''वह'' एक वचन है और ''वे'' बहुवचन है। *एक* व्यक्ति ने पढ़ा, परन्तु *बहुतों* ने सुना। CEV में ''हर कोई जो इस भविष्यवाणी को दूसरों के लिए पढ़ता है'' है। [9]वचन को आम लोगों में पढ़ना आराधनालय की आराधना का भाग था (लूका 4:16; प्रेरितों 13:15) और यह मसीही आराधना का आवश्यक भाग बन गया। [10]1:3 वाले 'सुनने' का अर्थ केवल शब्दों या आवाज़ को सुनना नहीं है, बल्कि इसमें वचन को उत्सुकता से सुनने अर्थात आज्ञा मानने के लिए तैयार होना शामिल है (देखें प्रेरितों 10:33)। वचन को ग्रहण करना उतना ही आवश्यक है, जितना वचन को पेश करना (मत्ती 13 और लूका 8 में बीज बोने वाले का दृष्टांत देखें)।

[11]''ध्यान देना'' शब्द यूनानी शब्द से लिया गया है, जिसका अर्थ ''चौकस रहना, पहरा देना और रक्षा करना'' हो सकता है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की रक्षा करना हमारी ज़ि मेदारी है (22:18, 19)। परन्तु इस संदर्भ में इस शब्द का अर्थ ''मानना या आज्ञा मानना'' लगता है। [12]हम में से अधिकतर लोग भविष्यवाणी को स्वाभाविक ही ''भविष्य की पूर्व सूचना'' के रूप में मानते हैं। परन्तु ध्यान दें कि ''[इस] भविष्यवाणी की बातें'' *मानी जानी* थीं। किसी भविष्यवाणी की आज्ञा मानने की आवश्यकता नहीं होती; बल्कि आप आज्ञाओं को ही मानते हैं। प्रकाशितवाक्य में भविष्य की पूर्वसूचनाएं होने के बावजूद, ''भविष्यवाणी'' शब्द मु यतया ''परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए संदेश'' के लिए है जिसमें माने जाने के लिए आज्ञाएं हैं (22:7 और 22:12 की तुलना करें)। [13]पहली और अन्तिम पुस्तक की अधिकतर आज्ञाएं स्पष्ट हैं (देखें 2:5, 16, 25; 3:2, 3, 11, 18, 19; 11:11), परन्तु 2:10 की आज्ञाएं (''जो दुख तुझ को झेलने होंगे, उन से मत डर''; ''प्राण देने तक विश्वासी रह'') पूरी पुस्तक में ही *संकेत* हैं। [14]यह आश्वासन कि ''समय निकट है,'' 22:10 में भी मिलता है। [15]हैरल्ड हैज़लिप, *द लॉर्ड रेन्स: ए सर्वे ऑफ़ द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (अबिलेन, टैक्सस: हैरल्ड ऑफ़ ट्रुथ, तिथि नहीं), 4. [16]इस पुस्तक में पहले आया मानचित्र ''100 ईस्वी के आस-पास रोमी साम्राज्य'' देखें। [17]एडवर्ड ए. मैकडॉवल, *द मीनिंग एण्ड द मैसेज ऑफ़ द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1951), 5. [18]रेअ समर्स, *वरदी इज़ द लै ब* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1951) 85. [19]परमेश्वर की प्रेरणा से लिखने वालों का अभिवादन का ढंग यही था। पौलुस और पतरस के पत्रों के आर भ देखें। 2 यूहन्ना 3 भी देखें। [20]इस पुस्तक के पिछले पाठ में मैंने कहा था कि प्रकाशितवाक्य के यूनानी शास्त्र का व्याकरण कई जगह अपर परागत है। यह उन में से एक स्थान है। मूल शास्त्र में मूलत: ''(जो) था, (जो) है और (जो) आ रहा'' है। जैसा कि पहले कहा गया था, व्याकरण अपर परागत हो सकता है परन्तु यह प्रभावी है!

[21]''सिंहासन के सामने'' वाक्यांश का अर्थ ''उसकी इच्छा पूरी करने को तैयार'' है। [22]यह शब्दावली कई बार यीशु पर लागू होती है; परन्तु आयत 5 में यीशु का नाम होने के कारण यह शब्दावली पिता के लिए ही होनी चाहिए। [23]कुछ लोगों का मानना है कि यह वाक्यांश केवल परमेश्वर की आज्ञा की प्रतीक्षा में सात आत्मिक जीवों (शायद स्वर्गदूतों) के लिए है। यह हो सकता है, परन्तु इस संदर्भ की सात पुस्तकों का संदर्भ इस निष्कर्ष का समर्थन करता है कि यह पवित्र आत्मा है: (1) उससे कम आत्माओं को आम तौर पर पिता और पुत्र से नहीं जोड़ा जाता। (2) यदि ''सात आत्माओं'' शब्द (जो 3:1; 4:5 और 5:6 में भी मिलता है) पवित्र आत्मा के लिए नहीं है, तो प्रकाशितवाक्य पवित्र आत्मा के बारे में या बहुत कम कहता है या कुछ कहता ही नहीं। [24]कुछ लोग इसे यशायाह 11:2 में आत्मा के सात गुणा गुणों या जकर्याह 4:6, 10 वाली

परमेश्वर की सात आंखों के लिए देखते हैं। [25]जे. डब्ल्यू. रॉबर्ट्स, *द रैवेलेशन टू जॉन (द अपोकलिप्स),* द लिविंग वर्ड कमैंट्री सीरीज़ (ऑस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1974), 29. [26]मूसा और मसीह में समानता बनाई जा सकती है, जो दोनों ही वचन की गवाही देने में विश्वासयोग्य थे। [27]मसीही लोगों से ''प्राण देने तक विश्वासी'' (2:10) रहने के लिए कहकर मसीह उन्हें वह करने के लिए नहीं कह रह था जो वह स्वयं करने को तैयार नहीं था।[28] ''पहलौठा'' शब्द पहलौठे पुत्र को मिलने वाले विशेषाधिकार के स बन्ध में पुराने नियम की शिक्षा से लिया गया है (उदाहरण के लिए, देखें व्यवस्थाविवरण 21:15-17)। कुलुस्सियों 1:18 में ''पहलौठा'' शब्द ''प्राथमिकता'' शब्द से स बन्धित है (KJV; NASB में ''प्रथम स्थान'' है)। ''पहलौठा'' शब्द में यह सुझाव *नहीं* है कि यीशु सृष्टि है, जैसा कि यहोवा विटनेस वाले दावा करते हैं। [29]कुछ लोगों का दावा है कि यीशु अब राज नहीं कर रहा है, परन्तु बाइबल सिखाती है कि वह कर रहा है (1 कुरिन्थियों 15:24-28)। उनकी आपत्ति है, ''यदि मसीह अब राज कर रहा है, तो संसार की हालत इतनी बुरी क्यों है?'' यदि संसार की स्थिति से यह प्रमाण मिलता है कि यीशु राज नहीं कर रहा तो इससे यह भी प्रमाण मिलता है कि परमेश्वरत्व में से कोई भी अर्थात पिता भी राज *नहीं* कर रहा है! इस प्रश्न की चर्चा जिम मैक्विगन, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन,* लुकिंग इन टू द बाइबल सीरीज़ (लब्बॉक, टैक्सस: इंटरनैशनल बिबलिकल रिसोर्सेस, 1976), 35-37 में मिलती है। [30]यूनानी भाषा में वाक्यों का स बन्ध समय की अपेक्षा कार्य से अधिक होता है।

[31]कई प्राचीन हस्तलेखों में ''छुड़ाया'' के बजाय ''धोया'' है (देखें, KJV और NKJV)। ''छुड़ाना'' (*louo*) के लिए यूनानी शब्द ''धोना'' (*luo*) के लिए यूनानी शब्द से मिलता-जुलता है। अध्याय 7 की आयत 14 में ''धोना'' के लिए यूनानी शब्द का इस्तेमाल है। [32]यूनानी में अनिश्चित भूतकाल हिन्दी के भूतकाल की तरह ही है, परन्तु फिर ज़ोर क्रिया पर है। [33]कई प्राचीन हस्तलेखों में ''राज्य'' की जगह बहुवचन में ''राजा'' है (देखें KJV और NKJV)। अर्थ मूलत: एक ही है। [34]कुछ लोगों ने ''बना दिया'' का अर्थ यह निकाला है कि यीशु हमें *भविष्य में* एक राज्य बना देगा। परन्तु NASB में ''to be'' शब्द इटैलिक (तिरछे) किए गए हैं, जो इस बात का संकेत हैं कि उन्हें अनुवादकों द्वारा जोड़ा गया है। मूल शास्त्र में मूलत:, ''उसने हमें एक राज्य बनाया'' है। राज्य भविष्य में नहीं है क्योंकि राज्य तो स्थापित हो चुका है (देखें कुलुस्सियों 1:13)। [35]इससे यहोवा विटनेस वालों का दावा ठुहस हो जाता है कि यीशु 1914 में चुपके से आया और किसी को दिखाई नहीं दिया [36]देखें यूहन्ना 19:32-37. [37]रॉबर्ट्स, 31. रॉबर्ट्स ने प्रतिज्ञा की व्यापकता के कारण कहा: ''हर आंख,'' ''पृथ्वी का हर गोत्र।'' [38]प्रकाशितवाक्य में पृथ्वी के लोग गैर मसीही नहीं हैं। [39]विलियम हैंड्रिक्सन, *मोर दैन कंकरर्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1954), 68. [40]कुछ लोगों का दावा है कि अस्थाई न्याय के लिए आने के अलावा कोई और द्वितीय आगमन नहीं है, परन्तु यह तो द्वितीय आगमन पर नये नियम की शिक्षा के विपरीत है। उदाहरण के लिए हमारे लिए प्रभु भोज *जब तक वह न आए* तब तक लेना आवश्यक है (1 कुरिन्थियों 11:26)। यदि द्वितीय आगमन हो चुका है, तो हमें प्रभु भोज में भाग नहीं लेना चाहिए। क्या कोई यह सिखाने का साहस करेगा कि हमें अब प्रभु भोज में भाग नहीं लेना चाहिए?

[41]यूहन्ना ने पहले अभिपुष्टि के यूनानी रूप का और फिर इब्रानी रूप का इस्तेमाल किया। [42]नहे याह 5:13 से लिया गया। [43]इसके अलावा ये तथ्य कि आयत 8 के पहले और बाद की आयतें यीशु की बात कर रही हैं इस विचार का समर्थन करेंगे कि आयत 8 में यीशु ने बात की। [44]दोनों ही परमेश्वरत्व का भाग हैं (देखें कुलुस्सियों 2:9)। जो एक करता है, वही दूसरे के लिए कहा जा सकता है। [45]इस पुस्तक में पहले आए ''मूसा और निर्गमन'' पर भाग देखें। और भी जोड़ जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, सीनै पर्वत पर (निर्गमन 19:16, 19) और पतमुस पर (प्रकाशितवाक्य 1:10) ध्यान आकर्षित करने के लिए तुरही जैसी आवाज़ पर ध्यान दें। फिर यह ध्यान दिया जा सकता है कि डोमिशियन की तरह फिरौन की पूजा भी देवता के रूप में होती थी और यह कि निर्गमन की कहानी वाला झूठा भविष्यवक्ता (बिलाम) प्रकाशितवाक्य वाले झूठे भविष्यवक्ता की कहानी से मिलता-जुलता है। [46]यदि इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में किया जाता है, तो आयत 5 के शब्दों को वापस यहां लाएं: वह ''हम से प्रेम रखता है, और उसने अपने लहू के द्वारा हमें पापों

से छुड़ाया है।'' प्रतिज्ञाएं केवल उन्हीं के लिए हैं, जिन्हें लहू से धोया गया है–और इसके लिए लहू से पाप धोने के लिए बपतिस्मा लेना आवश्यक है (प्रेरितों 22:16)।[47]पीटरसन, 609. [48]आपके क्षेत्र में प्रमाणिकता की कोई भी प्रसिद्ध मुहर इस्तेमाल की जा सकती है।[49]माउंस, 1926. प्रकाशितवाक्य में धन्यवचनों पर पाठ 1992 की हार्डिंग यूनिवर्सिटी लैक्चरशिप बुक *विज़न ऑफ़ विक्टरी: द बुक ऑफ़ रैवलेशन,* और डी. टी. नाइयलस, *ऐज़ सीइंग द इनविज़िबल: ए स्टडी ऑफ़ द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (न्यू यॉर्क: हार्पर एण्ड ब्रदर्स, पब्लिशर्स, 1961), 60–61 में मिलती है।

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. आयत 1 में ''वे बातें जिनका शीघ्र होना आवश्यक है'' और आयत 3 में ''समय निकट है'' वाक्यांशों का क्या महत्व है?
2. पहली शताब्दी में वचन का लोगों में पढ़ा जाना कितना महत्वपूर्ण था? क्या आज भी यह महत्वपूर्ण है? क्यों?
3. प्रकाशितवाक्य में ''आसिया'' या ''एशिया'' शब्द का क्या अर्थ है? यह कहां स्थित था? मानचित्र पर इसे ढूंढ़ने का प्रयास करें।
4. पाठ के अनुसार, आयत 4 में वर्णित सात आत्माएं किस का प्रतिनिधित्व करती हैं? इस वाक्यांश में ''सात'' अंक का क्या महत्व है?
5. आयत 8 ''अल्फा और ओमेगा'' का वर्णन करती है। *अल्फा* और *ओमेगा* क्या हैं? प्रभु के लिए लागू किए जाने पर इन शब्दों का क्या अर्थ है?
6. पाठ में निर्गमन तथा सताए जाने वाले मसीही लोगों के लिए परमेश्वर की चिंता में कई तुलनाएं बनाई गई हैं। आप कितनी तुलनाओं पर विचार कर सकते हैं?
7. क्या आपको इस पाठ में कोई ऐसी बात सीखने को मिली है, जो व्यक्तिगत रूप से आपके लिए सहायक है? वह कौन सी बात है?